© 2018 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

शिक्षकों का शिक्षण व्यवहार

Dheerendra Kumar Singh
यूजीसी नेट–जेआरएफ (शिक्षाशास्त्र),
शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद

शिक्षक विभिन्न परिस्थितियों तथा विभिन्न संदर्भो में अनेक प्रकार से कार्य करता है। वह विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं में भाग लेता है। शिक्षक की इन सभी क्रियाओं को एक सामान्य वर्ग– शिक्षक व्यवहार में रखा जाता है। **रेयन्स (1970)** के अनुसार – "शिक्षक व्यवहार से तात्वर्य से व्यक्ति के उन सभी क्रियाओं तथा व्यवहार से होता है जो किसी शिक्षक के करने योग्य मानी जाती है। विशेष रूप से वे क्रियाएं जो दूसरों के सीखने में निर्देश एवं मार्गदर्शन से सम्बन्धित है।" **म्यूएकस् तथा स्मिथ (1964)** ने शिक्षक व्यवहार को और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा है कि शिक्षक व्यवहार के अन्तर्गत शिक्षक की वे क्रियाएँ आती हैं जो छात्रों की सीखने में उन्नति व वृद्वि करने हुतु विशेषतः कक्षा में शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक छाक्षों का अवलोकन करता है, उनकी भावनाओं को स्वीकार करता है तथा समझने का प्रयास करता है। वह विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है, उनका विश्लेषण करता है, व्याख्या करता है, छाक्षों को निर्देश देता है तथा अपने विषय की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करता है और इन सभी शिक्षण क्रियाओं में उसे भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। शिक्षण मुख्यतः एक शाब्दिक व्यवहार होता है। यद्यपि शिक्षक क्रियाओं में उसे भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। शिक्षण मुख्यतः एक शाब्दिक व्यवहार होता है। यद्यपि शिक्षक के हाव–भाव, शारीरिक क्रियाओं में शाब्दिक व्यवहार की प्रधानता होती है।

शिक्षण व्यवहार का सिद्वान्त

रेयन्य (1979) ने शिक्षण व्यवहार की जो परिभाष दी है उसकी दो अवधारणाएं हैं–

1. **शिक्षक व्यवहार एक सामाजिक व्यवहार है–** अर्थात शिक्षण प्रक्रिया में। सिखाने वाले के अतिरिक्त सीचाने वाल का उपस्थित होना अनिवार्य है। शिक्षक छात्र के मध्य पारस्परिक व्यवहार होता है। अत। न केवल शिक्षक ही छात्रों के व्यवहार को प्रभावित करता है अपितु छात्र भी शिक्षक व्यवहार को प्रभावित करता है।

2. **शिक्षक व्यवहार सापेक्षिक है–** शिक्षक कक्षा में जो कुड भी करता है वह उस सामाजिक परिस्थतियों का परिणाम है। जिसमें शिक्षक पढ़ाता है। शिक्षक का व्यवहार अच्छा या बुरा है।, सही या गलत है, प्रभावशाली है या प्रभावहीन है। यह इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक का व्यवहार, छात्र उपलब्धि का प्रकार, अपेक्षित शिक्षिण विधियाँ का प्रयोग किस सीमा तक उस संस्कृति के मूल्यों के साथ अनुरूपता रखती है तथा उसके हेतु वह भावी पीढ़ी को तैयार कर रहा है।

शिक्षण व्यवहार के सिद्वानत की कुछ आधार भूत धारणएँ :

शिक्षण – व्यवहार परिस्थिति जन्य तत्वों तथा शिक्षक की वैक्तिक विशेषताओं का कार्यकारी रूप है। शिक्षक का व्यवहार जो कुछ भी होता है उस पर बाहय परिस्थितियों का तथा शिक्षक की वक्तिक क्रिया प्रतिक्रिया का परिणाम ही शिक्षक व्यवहार है। **मैक्डोनाल्ड (1959)** ने शिक्षक व्यवहार को निम्न समीकरण द्वारा स्पष्ट किया है :–

शिक्षक व्यवहार त्र शिक्षक सम्बन्धी चर ग छात्र सम्बन्धी चर ग वातावरण सम्बन्धी चर

रेयन्स भी शिक्षण व्यवहार के तीन तत्वों पर बल देता है – 1, शिक्षक की विशेषताएँ 2, परिस्थितियाँ एवं 3, अन्तः क्रिया तथा पारस्परिक निर्भरता।

इस धारणा के साथ पुनः कुछ उपधारणायें रेयन्स ने दिए–

1. (अ) शिक्षक व्यवहार में विश्वसनीयता होती है–

(ब) शिक्षक व्यवहार में प्रतिक्रियाओं की संख्या सीमित होती है।

(स) शिक्षक व्यवहार सदैव सम्भावित होता है।

(द) शिक्षक व्यवहार प्रत्येक शिक्षक की वैक्तिक विशेषताओं का क्रियात्मक रूप है।

(य) शिक्षक व्यवहार अपनी परिस्थितियों की सामान्य विशेषताओं का क्रियात्मक रूप है।

(र) शिक्षक व्यवहार अपनी परिस्थितियों का जिसमें वह घटित होता है, क्रियात्मक रूप है।

2. शिक्षक व्यवहार का निरीक्षण किया जा सकता है– जब शिक्षक अध्ययन की बात सोचते हैं और फिर अध्ययन करने का प्रयास करते हैं तो यह मानकर चलते हैं कि शिक्षक व्यवहार का वस्तुनिष्ठ अध्ययन या तो प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा अथवा अप्रत्यक्ष साधनों द्वारा जो शिक्षक व्यवहार से सम्बन्धित है, किया जा सकता है। अप्रत्यक्ष साधन है – छात्र व्यवहार का मून्यांकन, शिक्षक की क्षमता व ज्ञान के परीक्षणों का प्रयोग, साक्षात्कार, रूचि अभिरूचि आदि।

कक्षागत व्यवहार का प्रकार

कक्षागत् शिक्षक व्यवहार को प्रायः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–' (अ) प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार एवं (ब) अप्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार।

(अ) प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार :

वह व्यवहार जिसमें शिक्षक कक्षा में अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास करता है, छात्रों के विचारों व व्यवहारों की आलोचना करता है, उन्हें स्वतन्त्रापूर्वक बोलने की अनुमति प्रदान नहीं करता है, शिक्षक के इस व्यवहार को फ्लैण्डर्स (1960) ने प्रत्यक्ष एण्डरसन (1939) ने आतंकवादी लिपिट तथा व्हाइट (1943) ने प्रभुत्वादी कहा जबकि विदआल (1949) ने शिक्षक केन्द्रि नाम से सम्बोधित किया। **कोगन (1956)** के अनुसार प्रत्यक्ष व्यवहार वाले शिक्षक असामाजिक, अधीर, स्वकेन्द्रित, उग्र, दम्भी, विद्वेषी मनोवृत्ति के होते हैं। वे छात्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार नहीं अपनाते हैं।

कुरैशी तथा हुसैन ने इस प्रकार के शिक्षकों की अनेक विशेषताओं जैसे – सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में वह छात्रों को भाग लेने से रोकता है, शिक्षण का अधिकांश समय भाषण द्वारा अपने विचार व्यक्त करने में व्यतीत करता है, छात्रों से कार्य कराने में निर्देश का प्रयोग करता है, स्वयं व्यवहार का औचित्य निर्धारित करता है, सम्प्रेषण में सामाजिक कुशलता का सर्वथा अभाव रहता है, छात्रों के साथ कार्य करने में रूचि नहीं लेता, शिक्षण अधिगम क्रिया में छात्रों को कम महत्व देता है।

इस प्रकार के व्यवहार में छात्रों की वैक्तिक भिन्नताओं के मनोवैज्ञानिक तथ्या को स्वीकार नहीं किया जाता है। इसमें छात्रों की इच्छा, शैक्षिक स्तर, रूचि आदि को स्वीकार नहीं किया जाता है। परिणाम स्वरूप छात्रों में शिक्षक प्रभुत्व के प्रति विरोधी व्यवहार की प्रवृत्ति अधिक होती है।

(ब) अप्रत्यक्ष शिक्षक व्यवहार :

जब शिक्षक कक्षा में छात्रों को कार्य करने की, उनके विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है तो दस प्रकार के व्यवहार को अप्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार कहते हैं। शिक्षक छात्रों के विचारों को स्वीकार करता है। तथा उनका स्पष्टीकरण करता है, वह अपने विचारों को मानने के लिए छात्रों को बाध्य नहीं करता है। लैण्डर्स इस प्रकार के व्यवहार को अप्रत्यक्ष व्यवहार, एण्डरसन ने समन्वयी व्यवहार तथा लिप्टि और व्हाइट ने प्रजातांत्ररिक व्यवहार कहा है। जबकि बिदआल के अनुसार वह छात्र केन्द्रित व्यवहार है। [1] कक्षा में शिक्षक कम बोलता है और छात्रों को बोलने का अधिक अवसर प्रदान करता है, छात्रों की समस्याओं को समझकर उनका समाधान करने का प्रयास करता है। ऐसा शिक्षक प्रश्न अधिक पूंछता है जिससे छात्र

अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में क्रियाशीन रहने की प्रेरणा प्राप्त करते है। **कोगन (1958)** ने अपने अध्ययन के आधार पर अप्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार को सहायक, अच्छे स्वभव वाला, मैत्री भाव वाला, धैर्यशाली तथा सहानुभूतिपवर्ण बताया है। **कुरैशी तथा हुसैन (1972)** ने अप्रत्यक्ष व्यवहार वाले शिक्षकों की अनेक विशेषताएं है जैसे – सीखने की प्रक्रिया में छात्रो की अधिकाधिक भागीदारी हेतु प्रोत्साहित करना, अध्ययन–अध्यापन की योजना बनाने में छात्रों का सहयोग प्राप्त करना, कक्षा में अधिक प्रश्न पूँछना, छात्रो के कार्यो की प्रशंसा करना, उनके विचारों को स्वीकार करना आदि। छात्रों के व्यवहारों की आलोचना या दण्ड का स्थान इसमें नहीं होता है। छात्रों की इच्छा का या आवश्यकतानुसार शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन किया है। अतः लचीनापन बनाया जाता है। छात्रों की समस्यो को समझने व हल करने का प्रयास किया जाता है तथा इससे सदा सजीव वातावरण बना रहता है।

शिक्षण व्यवहार का मापन

शिक्षण का अर्थ शिक्षक व छात्र के मध्य अन्तः क्रिया से है। कक्षा में होने वाले घटनाओं का बोध वास्तविक कक्षा स्थिति के क्रमबद्व निरीक्षण से ही सम्भव है। क्रमबद्व निरीक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे कक्षा व्यवहार का निरीक्षण वस्तुनिष्ठ रूप से किया जा सकता है। फलैण्डर्स अतः क्रिया दस वर्ग प्रविधि की सहायता से कक्षा में शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्तः क्रियाओ का अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रविधि की सहायता से अन्तः क्रिया चरों तथा व्यवहारों का मापन किया जाता है।

फ्लैण्डर्स अतः क्रिया दस वर्ग प्रविधि

अन्तः क्रिया विश्लेषण हेतु फ्लैण्डर्स अतःक्रिया दस वर्ग प्रविधि सर्वोत्तम उपकरण है। फ्लैण्डर्स ने 1950 में इस विधि का निर्माण 'शिक्षक प्रभाव व छात्र निष्पादित' के शोध कार्य हेतु किया। यह विधि विशेष रूप से कक्षा में शाब्दिक व्यवहार तथा कक्षागत संप्रेषण के लिए प्रयुक्त की जाती है। शिक्षक तथा छात्रों के मध्य अशाब्दिक व्यवहारों की अपेक्षा शाब्दिक व्यवहारों की प्रधानता होती है। फ्लैण्डर्स की यह धारणा है कि कक्षा का शाब्दिक व्यवहार का निरीक्षण अधिक अविश्वनीयता से किया जा सकता है।

फ्लैण्डर्स ने अपने सहयोगियों के साथ मिनेसोटा विश्वविद्यालय (1955–60) में इस वर्ग पद्धति का विकास किया। इस प्रविधि की सहायता से 3 सेकेण्ड तथा इससे भी कम समय में होने वाली घटना का निरीक्षण क्रमबद्ध रूप से किया जाता है। यह कक्षागत निरीक्षण की एक वस्तुनिष्ठा तथा वैज्ञानिक प्रविधि मानी जाती है। इस वर्ग पद्धति की मुख्य विशेषता दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य स्वोपक्रम तथा अनुक्रिया का निरीक्षण करना है। 'स्वोपक्रम' का अर्थ है सबसे पहले प्रयास करना, आगे बढ़कर आगे बढ़कर काम करना तथा कोई नया विचार प्रस्तुत करना। 'अनुक्रिया' का अर्थ है स्वोपक्रम के बाद या उसके प्रति किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया करना।

फ्लैण्डर्स के कक्षा में होने वाले सभी शाब्दिक व्यवहारों को दस वर्गों में वगीकृत किया है। इसमें कुछ वर्ग (प्रथम सात वर्ग) शिक्षक व्यवहार से तथा दो वर्गों (वर्ग 8 तथा 9) छात्र व्यवहार से सम्बन्धित है। अन्तिम वर्ग (वर्ग 10) मौन या विभ्रांति का है जिसमें उन व्यवहारों को रखा जाता है जो या तो प्रथम वर्गों में से किसी में भी नहीं आते है या कक्षा में पूर्णतया मौन हो। कक्षा में होने वाली सभी शाब्दिक क्रियाओं को तीन भागों में विभाजित किया गया है– 1. शिक्षक कथन, 2. छात्र कथन तथा 3. मौन या विभ्रांति।

व्यवहार	क्रिया	वर्ग
अप्रत्यक्ष	अनुक्रिया	**1. अनुभूति को स्वीकार करना:**बिना किसी भर्त्सना के छात्रों की अनुभतियों व भावों को महत्व देना, स्वीकार करना, अनुभूति सकारात्मक या नकारात्मक हो जाती है। **2. प्रशंसा एवं प्रोत्साहनः** छात्र व्यवहार तथा कार्य की प्रशंसा करना तथा प्रोत्साहित

शिक्षक कथन		करना, तनाव दूर करने के लिए परिहास करना, सिर हिलाना, 'हूँ' कहना। **3. छात्रों के विचारों को स्वीकार करना व कथन में प्रयोग करनाः** छात्रों द्वारा व्यक्त विचारों को स्पष्ट करना तथा विकसित करना, पुनः दोहराना आदि।
		4.**प्रश्न पूछनाः**विषय सम्बन्धी या प्रक्रिया सम्बन्धी प्रश्न पूछना जिनके उत्तर की छात्रों से अपेक्षा की जाती है।
शिक्षक कथन	स्वोपक्रम	**5. व्याख्यान देनाः** विषय या प्रक्रिया सम्बन्धी तथ्य देना, स्वयं के विचार प्रकट करना, स्वयं स्पष्टीकरण देना, छात्र के अतिरिक्त किसी अन्य का उद्धरण देना। **6.निर्देश देनाः** निर्देश व आज्ञा देना जिनको पलान करने की अपेक्षा छात्रों के अमान्य व्यवहारों में परिवर्तन के लिए कथन तथा आलोचना करना, प्रभुत्व जमाना। **7. आलोचना एवं अधिकार प्रदर्शनः** छात्रों के अमान्य व्यवहारों में परिवर्तन के लिए कथन तथा आलोचना करना, प्रभुत्व जमाना।
	अनुक्रिया	**8. छात्र–कथन अनुक्रिया :** शिक्षक कथन की प्रतिक्रिया स्वरूप छात्र का कथन, छात्र स्वतंत्रता का सीमित होना है।
	स्वोपक्रम	**9. छात्र–कथन स्वोपक्रमः** छात्र स्वोपक्रम के कथन, विचारों को व्यक्त करना, नवीन विषय को प्रस्तुत करना, विचारोंत्तजक प्रश्नों को पूछना, छात्र स्वतन्त्रता का होना।
प्रत्यक्ष शिक्षक कथन छात्र–कथन मौन/विभ्रांति	दोनों/एक भी नहीं	**10. मौन या विभ्रांति :** विराम, अल्पकालीन मौन तथा विभ्रांति की स्थिति जिसमें स्पष्ट सम्प्रेषण नहीं स्पष्ट सम्प्रेषण नहीं होता है।

निष्कर्ष

रेयन्स (1970) की आधारभूत अवधारणाओं में यह देखा गया है कि विभिन्न शिक्षक विभिन्न व्यवहार करते है तथा एक ही शिक्षक भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न व्यवहार करता है। शिक्षक व्यवहार को निर्धारित करने वाले अनेकों तत्व हैं।

इस सम्बन्ध में अधिकांश शोध कार्य शिक्षक के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों को ही खोज पाए हैं, जो शिक्षक व्यवहार पर अपना प्रभाव डालते है। मिनेसोटा शिक्षक मनोवृत्ति प्रश्नावली पर शिक्षकों के प्रप्तांको का सह–सम्बन्ध कक्षा व्यवहार से धनात्मक ही पाया गया है। **एस0के0 सिंह (1974)** को अपने शोध कार्य में अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार का शिक्षक मनोवृत्ति से धनात्मक तथा अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार का नकारात्मक सह सम्बन्ध पाया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कक्षा में शिक्षक के व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्वों में से व्यक्तित्व भी एक तत्व हैं।

शिक्षण कार्य कक्षा में छात्रों के मध्य उनके सहयोग से ही पूर्ण होता है। अतः जिस वातावरण में तथा जिस समाज में शिक्षण कार्य करता है वह भी उसके व्यवहार पर प्रभाव डालते है। सन् 1954 में होहन ने अपने अध्ययन में छात्रों की सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का प्रभाव शिक्षक द्वारा प्रेरित सम्बन्धों के प्रकार व आवृत्ति पर देखा। आवृत्ति में तो कोई अन्दर नहीं पाया गया परन्तु स्वरूप में अन्तर अवश्य पाया गया। निम्न वर्ग के छात्रों के साथ शिक्षकों का व्यवहार अधिक प्रभुत्वपूर्ण तथा उच्च वर्ग के छात्रों के साथ सहयोगपूर्ण पाया गया। हम इन निष्कर्षों को पूर्ण विश्वास के साथ स्वीकार नही कर सकते क्योंकि छात्रों के सामाजिक– आर्थिक स्तर साथ ही साथ अन्य तत्व भी शिक्षक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

टर्नर (1967) के अनुसार छात्रों की योग्यता भी कक्षागत शिक्षक व्यवहार को प्रभावित करती है। जो छात्र उच्च बौद्धिक क्षमता वाले होते हैं वे कक्षा में अधिक स्वोपक्रम करते हैं। उस समय शिक्षक छात्रों को आत्म निर्देश तथा आत्माभिव्यक्ति के लिए अधिक अवसर प्रदान करता है। छात्र शिक्षक के समक्ष ऐसे विकल्प प्रस्तुत करते हैं जिनके लिए शिक्षक को विशिष्ट व्यवहार करना पड़ता है।

इन निष्कर्षों के आधार पर सारांशतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक व्यवहार का निर्धारणः

–आंशिक रूप से व्यक्तित्व में से उदित मनोवैज्ञानिक शक्तियों द्वारा होता है।

–आंशिक रूप से वातवरणजन्य मनोवैज्ञानिक शक्तियों द्वारा होता है।

–स्वयं की तथा सामाजिक की अन्तःक्रिया द्वारा होता है।

अतः शिक्षकों का शिक्षण व्यवहार का निर्धारण उपरोक्त तीनों शक्तियों की अन्तः क्रिया द्वारा होता है।

सन्दर्भ

1. कालिन्स आर0: द एफेशियेन्सी आफ द एम0टी0 आई0, जन0 आफ एप्लाईड साइकोलाजी, 37 पृ0 82–85।
2. कोगन एम0एल0: हरवार्ड एजुकेशनल रिव्यू, 24, पृ0 315–342।
3. टर्नर टी0आर0: प्यूपिल इनफ्लू0 टीचर बीहे0 न्यूज लेटर 3.1 पृ0 5–8।
4. फ्लैण्डर्स एन0ए0: एनालाजिंग टींचिंग बीहेवियर, एडीसन वैसले पब्लिकेशन, कैलिफोनिर्या, 1970, पृष्ठ 34–50।
5. म्यूएकस एम0: लाजिकल डाईमेन्शन आफ टीचिंग बीहेवियर, न्यू0 पृ0 129।
6. रेयन्स डी0जी0: कैरेक्टरिस्टिक आफ टीचर्स, ए रिसर्च स्टडी, वाशि0, पृ0 15, 370,394।
7.रेयन्स डी0जी0: एजुकेशनल साइकोलाजी, वुड वर्थ पब्लिक0 क0, 1959, पृ0 748।
8.सिंह एम0 के0: द रिलेशनशिप बिटवीन द वर्बल इन्ट्ररैक्शन एण्ड एटीट्यूड टूवडर्स टीचिंग, पी–एच0डी0 एम0, एम0 यू0पृ0 302।
9. होहन ए0जे0: ए स्टडी ऑफ सोशल क्लास डिफ्रेनसिएशन एण्ड क्लास रूप बिहेवियर आन टीचर्स, जनरल आफ सोशल साइकोलाजी, 30, पृ0 269–293।